रिकार्ड–दूर देश का रहने वाला.............ओमशांति प्रातःक्लास 13–7–67

ना दूर देश की रहने वाली आत्मा देखने में आती है ना दूर देश का रहने वाला परमात्मा देखने में आता है। एक है आत्मा और परमात्मा है जो इन आंखों से देखे नहीं जा सकते हैं। और सब चीजें देखने में आती हैं यह समझने में आता है। यह मनुष्य समझते हैं कि आत्मा अलग है,शरीर अलग है। आत्मा दूर देश से आकर शरीर में प्रवेश करती है। तुम हर एक बात को अच्छी रीति समझ रहे हो। हम आत्मा कैसे दूर देश से आती हैं। आत्मा भी देखने में नहीं आती है। पढ़ाने वाला बाप परमात्मा भी देखने में नहीं आता है। ऐसे तो कब भी कोई सत्संग में या शास्त्रों में सुना नहीं है। ना कब सुना ना देखा है। अब तुम जानते हो कि हम आत्मा देखने में नहीं आती हैं। आत्मा को ही पढ़ना है। आत्मा ही सब कुछ करती है। यह नई बातें हैं ना। और कोई समझा नहीं सकते। परमपिता परमात्मा जो कि ज्ञान का सागर है वो भी देखने में नहीं आता है। निराकार फिर पढ़ावे कैसे?आत्मा शरीर में आती है ना। वैसे ही परमपिता परमात्मा भी **(**भागीरथ**)**अथवा भाग्यशाली रथ में आते हैं। इस रथ की भी अपनी आत्मा हैं। वो फिर अपनी आत्मा को देख थोड़े ही सकता है। बाप इस रथ के आधार से आकर बच्चों को पढ़ाते हैं। आत्मा भी एक शरीर छोड़कर फिर दूसरा लेती है। आत्मा की पहचान है। मगर देखी नहीं जाती है। वो तुमको पढ़ा रहे हैं। यह है बिल्कुल ही नई बात। बाप भी कहते हैं कि मैं भी ड्रामाप्लान अनुसार अपने ही समय पर आकर शरीर धारण करता हॅू। नहीं तो तुम मीठे2 बच्चों को दु:ख से कैसे छुड़वाउं? अब तुम बच्चे जागे हुए हो। दुनियां में तो सभी सोये हुए हैं जब तक कि तुम्हारे पास आकर समझें और ब्राह्मण बनें। और सत्संगों में तो कोई भी जाकर बैठ सकते हैं। यहां पर यूं ही ऐसे कोई आ नहीं सकते हैं ;क्योंकि यह तो पाठशाला है ना। बैरिस्टरी की परीक्षा में तुम जाकर बैठो तो कुछ भी नहीं समझ सकेंगे। यह भी है तो बिल्कुल ही नई बात। पढ़ाने वाला भी देखने में नहीं आता है। पढ़ने **(**आत्मा**)**वाले भी देखने में नहीं आते हैं। आत्मा अंदर ही अंदर सुनती है। धारण करती है। अंदर2 निश्चय होता जाता है कि यह बात तो बरोबर ही ठीक है। परमात्मा और आत्मा दोनों की देखने में नहीं आते हैं। बुद्धि से समझा जाता है कि हां, मैं आत्मा हॅू। कई तो यह भी नहीं मानते हैं। कह देते हैं कि यह तो नेचर है। इसका फिर ......भी करते हैं। बाप आते ही हैं इस नालेज में तुमको **(**बिजी**)** करने। कर्मइन्द्रियां तो जो धोखा देती हैं उनको भी तो वश में करना है। मुख्य तो हैं आंखें जो सब कुछ देखती हैं। आंखें ही बच्चा देखती हैं तो कहती हैं कि यह मेरा वा हमारा बच्चा है। नहीं तो समझें ही कैसे?कई तो फिर जन्म से ही अंधे हो जाते हैं। तो समझाते हैं कि यह तुम्हारा भाई है। देख जो नहीं सकते हैं। बुद्धि से समझते। वास्तव में जो अंधे सूरदास हों वो ज्ञान को अच्छी तरह उठा सकेंगे ;क्योंकि उनके पास तो धोखा देने वाली आंखें नहीं हैं। भल वो और कुछ काम कर नहीं सकेंगे। स्त्री को भी नहीं देखेंगे। दूसरे को देखेंगे तो उनकी बुद्धि जावेंगी कि इनको छूवें,यह करें। मगर आंखें ही नहीं हैं तो देखेंगे ही कैसे?तो बाबा कितना समझाते हैं कि कर्मेंद्रियों को पक्का करना है। स्त्री को देखते हैं तो दिल हो आती है कि इनको हाथ लगावें ,यह करें,छूवें,ऐसा करें। तो यह सब नहीं होना चाहिए। यही है शत्रु। कोई2 तो बिल्कुल ही हाथ भी लगाने नहीं देते हैं। उस क्रिमिनल अर्थात् बुरी दृष्टि से बहन को नहीं देखना है। भल भाई अपनी बहन को भाकी पहनते हैं ; परंतु बहन के ही खयाल से। तुम भी तो बहन–भाई हो ना। बुरी दृष्टि का खया लना हो जरा सा भी। भल आजकल तो कलियुग है। भाई–बहन की भी बुरी नजर हो जाती है। वो भी खराब हो जाते हैं ;परंतु लॉ मुआफिक भाई–बहनों की बुरी खयालात हो नहीं सकती है। हम बाप के बच्चे हैं। बाप डायरैक्शन देते हैं कि तुम ब्र.कु.कु. हो तो यह ज्ञान हो जाता है कि तुम भाइ–बहन हो। हम आत्मायें भगवान के बच्चे हैं निराकारी। फिर शरीर में प्रजापिता ब्रह्माजी द्वारा भाई–बहन......................
.......हम आत्मा

इनसे अलग हूँ। इन कर्मइन्द्रियों से कर्म करती हूँ। मैं कर्मइन्द्रियां थोड़े ही हूँ। मैं तो इनसे न्यारी आत्मा हूँ। यह शरीर लेकर मैं पार्ट बजाती हूँ। सो भी अलौकिक है। और कोई मनुष्य यह पार्ट नहीं बजाते हैं। तुम जानते हो। बार2 अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। फिर वो ही बाबा हमारा टीचर भी है तो गुरू भी है। वो साकारी बाप ,टीचर ,गुरू अलग2 होते हैं। यह निराकारी तो एक ही बाप भी है तो टीचर और सतगुरू भी है। यहां बच्चों को अभी नई शिक्षा मिल रही है। बाप,टीचर,गुरू तीनों ही निराकारी हैं। हम भी निराकार आत्मा पढ़ते हैं। तभी तो समझा जावे ना आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल। मिलन फिर यहां पर ही होता है जबकि बाप को आकर पावन बनाना होता है। मूलवतन में आत्मायें जाकर मिलेंगी ;परंतु वहां पर तो कोई खेल ही नहीं है। वो तो है अपना घर। जहां पर तो सब आत्मायें रहती हैं। अंत में तो सभी आत्मायें वहां पर ही चली जावेंगी। आत्मायें जो पार्ट बजाती आती हैं वो बीच में से वापस जा नहीं सकती हैं। अंत तक ही पार्ट बजाना है। पुनर्जन्म लेते ही रहना है। तब तक जबकि सभी आ जावें। सतोप्रधान से सतो,रजो,तमो में आ जाते हैं। फिर पिछाड़ी में नाटक पूरा होता है। तमोप्रधान से फिर सतोप्रधान बनना है। बाप सभी बातें तो ठीक2 समझाते हैं। भक्ति है ही..........................यह है सत्य। शिव सत्यम कहा जाता है ना। सत्य बोलने वाला। पुरुषोत्तम बनने लिए तो यही एक सत्संग होता है। बाप जब आवे तब उनके ज्ञान को ही सत्संग कहा जाता है। बाकी तो सभी है कुसंग। गाया भी जाता है ना संग तारे कुसंग बोड़े। कुसंग है रावण का। बाप कहते हैं कि मैं तो तुमको तार कर जाता हूँ फिर तुमको डुबोता कौन है?तमोप्रधान तुम कैसे बन जाते हो?वो भी बताना पड़ता है। सामने दुश्मन है माया। शिवबाबा है सज्जन। इनको गाया जाता है सीताओं का पति। यह महिमा कोई रावण की नहीं है। सिर्फ कहेंगे कि रावण है ,बस। और कुछ नहीं। रावण वो क्यों जलाते हैं वो भी कुछ पता नहीं है। बाप समझाते हैं कि यह रावण कितना जबरदस्त है। सो भी दुश्मन है। रावण दुश्मन और यह बाप सज्जन है। वो श्राप हैं बाप वर्सा देते रहते हैं। दुनियां इन बातों को नहीं जानती है। जब वो लोग रावण को जलाते हैं तो वहां पर भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते हैं कि रावण कौन है,कब आता है,क्यों जलाते हैं?ब्लाइंडफेथ है ना। तुम बच्चों को समझाने के लिए अथॉरिटी है। जैसे वो शास्त्रों की अथॉरिटी भी सुनाते हैं ना,फिर सुनाने,सुनने वाले भी बहुत मस्त होकर सुनते हैं। उनके लिए पैसे देते रहते हैं। संस्कृत सिखाओ,गीता सिखाओ तो उनके लिए भी बहुत पैसे देते हैं। तुम जानते हो कि वो सब वेस्ट ऑफ टाइम,वेस्ट ऑफ मनी,वेस्ट ऑफ एनर्जी करते रहते हैं। बाप भी कहते हैं कि तुम कितना वेस्ट ऑफ टाइम,वेस्ट ऑफ एनर्जी करते रहते हो। वेस्ट ऑफ मनी भी करते आये हो। जो इस ब्राह्मण कुल के होते हैं वो निकल आते हैं। इसलिए ही तुम प्रदर्शनियां आदि भी करते रहते हो। फिर कोई यहां का फूल होगा तो **(आयेगा)**जरूर। यह झाड़ बढ़ता ही जाता है। बाप ने कलम लगाया है। एक से बढ़ता ही गया। पहले घर वाले ,फिर मित्र सम्बंधी,फिर आस–पड़ोस वाले आने लगे। फिर सुनते2 कितने ही आ जाते **(थे)**। समझते **(थे)**कि यह भी सतयुग है ;परंतु इसमें पवित्रता की मुसीबत थी। जिससे ही हंगामा हो गया। अभी तक भी होता रहता है। इसलिए ही गालियां देते रहते हैं। कहते हैं ना भगाते थे,पटरानी बनाते थे। पटरानी तो स्वर्ग में बनेंगी ना। जरूर फिर यहां पर ही पवित्र बनाया होगा। तुम सबको सुनाते हो महारानी–महाराजा बनने लिए नालेज है। नर से नारायण बनने की सच्ची2 कथा तुम सच्चे भगवान से सुनते हो। इन ल.ना. को कोई भगवान–भगवती कह नहीं सकते हैं ;परंतु पुजारी लोग कह देते हैं। योरोपियन्स भी गॉड–गॉडेज कहते हैं। कृष्ण को भी लॉर्ड कृष्ण कहते हैं। योरोपियन लोग ल.ना. के चित्र को इतना नहीं मानते हैं जितना कृष्ण के चित्र को। कृष्ण के चित्र तो बहुत खरीद कर ....महात्मा से भी बच्चों को उंचा .....

रखते हैं ;क्योंकि महात्माओं ने तो घर–बार आदि बनाकर फिर छोड़ा है। कोई2 ही बालब्रह्मचारी होते हैं ;परंतु उनको तो पता है कि काम,क्रोध.......क्यों होते हैं। छोटे बच्चे को पता नहीं रहता है। इसलिए ही महात्मा से उंच कहा जाता है। इसलिए ही कृष्ण को जास्ती मान देते हैं। कृष्ण को देखकर बहुत खुश होते हैं कि यह भारत का लॉर्ड कृष्ण है। बच्चे भी कृष्ण को बहुत प्यार करते हैं कि इन जैसा पति हमको मिले,इनसा बच्चा मिले। कृष्ण में कशिश बहुत है। सतोप्रधान है ना। बाप कहते हैं कि जितना तुम याद में रहेंगे उतना ही तुम सतोप्रधान बन जावेंगे और खुशी भी होगी। पहले2 सतोप्रधान थे तो बहुत खुशी में थे। फिर कलायें कम होती जाती हैं। गिरते ही जाते हैं। तुम जितना2 याद करते रहेंगे तो सुख भी फील होगा और तुम ट्रांसफर होते जावेंगे। सतोप्रधान,रजो,सतो में आते ही जावेंगे। वो ताकत,खुशी,धारणा बढ़ती ही जावेगी। इस समय तुम्हारी चढ़ती कला है। सिख लोग तो गाते भी हैं कि तेरे भाने सर्व का भला........तुम जानते हो कि अभी हमारी चढ़ती कला होती है याद से। जितना याद करेंगे उतनी ही उंच चढ़ती कला होगी। सतोप्रधान तो बनना है ना। चंद्रमा की भी लाइन बन जाती है। फिर बढ़ते2 सम्पूर्ण बन जाता है। तुम्हारी भी ऐसे ही है। चंद्रमा पर ग्रहण लगता है तो कहते हैं कि दे दान तो छूटे ग्रहण। इस समय भारत पर पूरा ग्रहण लग चुका है। भारत काला हो चुका है। अब बाप कहते हैं कि पांच विकारों का दान दो तो छूटे ग्रहण। आंखें भी कितना धोखा देती हैं। समझते हैं कि हमारी बुरी दृष्टि जाती है स्त्री पर। हम जबकि ब्र.कु.कु. बन गये तो फिर भाई–बहन हो गये। फिर दिल होती है कि उनको हाथ लगाउं। वो ब्रदर्ली लव निकल जाता है और स्त्रीपने का क्रिमिनल लव आ जाता है। कोई2 की दिल खाती है कि हम जबकि बाप के बन गये तो कोई भी हमको बुरी दृष्टि से हाथ नहीं लगावे। फिर कहते हैं कि बाबा हमको यह हाथ लगाते हैं। हमको यह अच्छा नहीं लगता है। गुस्सा फिर ऐसा आता है कि मैं चमाट मार दूं ;परंतु क्या करें?झगड़ा हो जावेगा। ऐसे2 समाचार बाबा पास आते हैं। बाबा फिर वाणी में ही चलाते रहते हैं कि इससे तो तुम्हारी अवस्था ठीक नहीं रहेगी। भल मुरली तो बहुत अच्छी चलाते हैं। बहुतों को समझाते हैं ;परंतु अवस्था कुछ भी नहीं। ऐसे भी बहुत हैं कि क्लास करने और करवाने वालों की भी बुरी नजर हो जाती है। बहुत ही खराब भी हो जाते हैं। बाबा के पास समाचार तो सभी आते रहते हैं ना। बाप बच्ची को खराब कर देते हैं। एक तो इस पर केस भी हुआ था। बोला कि यह तो मेरा ही (पैदा) किया हुआ फूल है ना। सो हमने ही काम में लाया तो हर्जा ही क्या है?इतनी तो गंदी दुनियां है। बच्चे समझते हैं कि मंजिल बहुत उंची है। बाप की याद में सैल्वेट होकर रहना है। हम तो ब्र.कु.कु. हैं हमारा तो रुहानी कनेक्शन है। ....ब्लड कनेक्शन नहीं है। वैसे खून से तो सभी पैदा होते हैं। सतयुग में भी ब्लड कनेक्शन नहीं हैं ;परंतु वो शरीर योगबल से मिलता है। कहेंगे नगन होने बिना बच्चे कैसे पैदा होंगे?बाप कहते हैं कि वो तो है ही निर्विकारी। नगन होते ही नहीं हैं। द्रौपदी ने कहा है कि नगन होने से बचाओ। तो जरूर वहां पर भी (बच्चे)तो रहते होंगे। वहां पर भी अगर नगन होंगे तो फिर तो वहां भी रावण राज्य हो जावे। फिर तो यहां में और वहां में फर्क ही क्या रह जावे। यह सारी समझने की बातें हैं। बुरी दृष्टि के मिट जाने में बहुत मेहनत लगती है। कालेज में लड़के–लड़कियां अगर इकट्ठे पढ़ते हैं तो बहुतों की ही क्रिमिनल आई हो जाती है। बच्चों को समझाना है कि हम सब गॉड फादर के बच्चे हैं तो सभी आपस में भाई–बहन हो गये ना। फिर हम बुरी नजर क्यों रखते हैं?सब कहते भी हैं कि हम ईश्वर की सन्तान हैं। आत्मायें तो हुई निर्विकारी संतान। बाप जरूर रचता है तो जरूर साकार से ही ब्राह्मण रचेंगे न। वो हो गई एडॉप्टेशन। गॉड के बच्चे। मनुष्यों की बुद्धि में यह बिल्कुल ही नहीं आता है कि प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सृष्टि कैसे रची जावेगी। तुम प्रजापिता ब्रह्मा की ब्र.कु.कु. हो। तुमने देखा कि कैसे रचना रची है। तुमको एडॉप्ट किया जाता है ....तो बहुत भाई–बहन ठहरे ना। बुरी नजर की बहुत (खबरदारी)

चाहिए। इसमें बहुतों को दिक्कत होती है। उंच पद पाना है तो मेहनत तो करनी है ना। कोई2 के अंदर जैसे कि चंचलता है। हाथ लगाने नहीं देते हैं तो मारते हैं। कामेषु–क्रोधेषु तो हैं ना। बाबा के पास तो सब समाचार आता है ....। लिखते हैं बाबा हमारी स्त्री तो जैसे कि सपनी है। यह सभी नाम इस समय के हैं। बाप कहते हैं कि पवित्र बनो। उनका भी नहीं मानते हैं। कोई2 मानते हैं ,कोई नहीं भी मानते हैं। बड़ी मेहनत है। मेहनत बिना उंच पद ही कैसे मिलेगा?बच्चों को बहुत खबरदार रहना है। भाई–बहन का अर्थ ही है एक बाप के बच्चे। फिर भी बुरी दृष्टि क्यों जानी चाहिए?बच्चे समझते भी हैं कि बाबा ठीक ही कहते हैं। हमारी तो क्रिमिनल दृष्टि जाती है। स्त्रियों की भी जाती है तो पुरुषों की भी जाती है। फिर बाबा को रिपोर्ट करते हैं। बाबा हमको यह हाथ लगाते हैं। जबकि हम बाबा की हो गई तो फिर यह हमारा क्या लगता है?अंदर में समझते हैं कि बरोबर ऐसा है। स्त्रियां भी फेल होती हैं। पुरुष जास्ती। मंजिल है ना। नालेज तो बहुत सुनाते हैं जबकि चलन भी तो पवित्रता की हो ना। इसलिए बाबा कहते हैं कि सबसे जास्ती दुःख देने वाली ,धोखा देने वाली आंखें ही हैं। मुख में भी पानी तभी आता है जबकि कोई चीज देखते हैं तो समझते हैं कि मैं खाउं। बच्चों को देखकर मोह उत्पन्न होता है। ऐसे भी नहीं कि आंखें धोखा देती हैं तो वो निकाल दें। शरीर को तो तंदरुस्त रखना है। **(**जो**)**जितना रहे। आयु भी बड़ी योगबल से ही होगी। आयु भी बड़ी योगबल से ही होगी। बाबा की भी आयु बड़ी होती जाती है। जन्मपत्री बताते हैं ना। बाबा की आयु भी 60वर्ष कहते थे। अब ब्रह्मा की आयु तो है 100वर्ष। तो आयु बड़ी हुई ना। यह राइट बात है। जितना योग में पवित्र रहते हैं उनकी आयु बड़ी होती है। भारत में जब पवित्र थे तो 150वर्ष आयु थी। वाइसलेस थे। विषयस होने पर आयु कम हो जाती है। अब तुमको आयु बढ़ाने का पुरुषार्थ करना है। याद से तुम पवित्र सतोप्रधान बनेंगे। तुम जानते हो कि हमारी आयु बड़ी होगी। तो आंखें कितना नुकसान देने वाली है। मंजिल बहुत बड़ी है। ऐसे मत समझो कि हम बहुतों को हम तो समझाते हैं। नहीं। जो कशिश होती है उसकी सम्भाल करनी है। सेकेंड में जीवनमुक्ति पाने का उपाय तो बताते हैं ;परंतु मेहनत करनी चाहिए। बाप कहते हैं मैंने हथेली पर सौगात में बहिश्त ....परंतु ऐसा फिर लायक बनना पड़ेगा। सतोप्रधान बनकर दिखाओ। याद है मुख्य। योग तो अनेकों प्रकार के होते हैं। याद एक ही प्रकार की होती है। अपने को आत्मा समझ बाप को भी बिंदी समझकर याद करना है। नंगे ही आये थे फिर नंगे ही जाना है। छी2 आत्मायें तो वापस जा नहीं सकेंगी। अपने को देखना होता है कि हमारी आत्मा पवित्र है। कहां पर चलायमान तो नहीं होते हैं। बाबा युक्तियां तो सभी बताते रहते हैं। क्रिमिनल आई रहने पर उंच पद पा नहीं सकते हैं। पुराने सम्बंध सभी छोड़ने हैं। काम,क्रोध..........उपर **(**जीत**)**पानी है। विश्व का मालिक बनना है तो मेहनत भी करनी पड़ेगी। अब तो देखते रहो कि इन इन्द्रियों पर हम विजय पाने का पुरुषार्थ करते रहते हैं। बाप जानते हैं कि अभी बच्चों में तो बहुत काम चाहिए। तूफान तो आते ही रहेंगे। कोई 100वर्ष का बूढ़ा भी होगा तो उनको भी माया तूफानों में लावेगी। बच्चों को कितना खबरदार करते हैं और फिर खुशी में भी लाते रहते हैं। बाबा ,आप हम बच्चों को पढ़ाने ,पतित से पावन बनने आते हो। तो अपने में वो गुण आदि भी लाने चाहिए। बुरी दृष्टि नहीं रखनी चाहिए। वहां पर सतयुग में कब भी क्रिमिनल आई रहती नहीं है। क्रिमिनल आई रावणराज्य में होती है। हार्टफेल नहीं होना है। इसमें तो बहुत ही बहादुरी चाहिए। बाप का बीड़ा बच्चों ने उठाया है ना। अब तुम बच्चे ही यह जानते हो कि कृष्ण की आत्मा ही अंत में जाकर भागीरथ बनती है। जिसमें ही बाबा प्रवेश करते हैं। नाम तो वो ही हो नहीं सकेगा ना। नाम तो जरूर दूसरा ही होगा। वो ही नाम थोड़े ही होगा। बाप कहते हैं कि मैं बहुत जन्मों के अंत में आकर इनमें प्रवेश करता हूॅ। तुम्हीं जानते हो कि बाप बिना स्वर्ग की स्थापना कोई कर नहीं सकता है। ओम